

श्री नीला माधब पण्डा

Shri Nila Madhab Panda



पद्म श्री

Padma Shri



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

श्री नीला माधब पण्डा

श्री नीला माधब पण्डा अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त प्रतिष्ठित फिल्म निर्माता एवं उत्कृष्ठ कथा–कार हैं।

2. आपका जन्म 2 जून, 1973 को पश्चिम उड़ीसा के सुबर्णपुर जिले में एक साधारण पृष्ठभूमि में हुआ था, आपका बचपन एवं किशोरावस्था, जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रतिदिन संघर्ष करने की एक अंतहीन गाथा थी। तथापि, एक सच्चा दूरदर्शी होने के नाते आपने कम आयु में ही अपने भाग्य को सही रूप देने के लिए अपने खुद के तरीकों का सृजन किया और आज अपने कठोर परिश्रम, लगन तथा गुणवता एवं उत्कृष्टता के अपने जुनून के दम पर आप एक अत्यंत सम्मानित फिल्म निर्माता हैं।

3. आपने लगभग 70 विविध एवं आधुनिकतम फिल्मों, वृत्तचित्रों एवं लघुचित्रों का निर्माण एवं निर्देशन किया है। ये फिल्में जलवायु परिवर्तन, बालश्रम, शिक्षा, जल संबंधी मामले, स्वच्छता जैसे सामाजिक महत्वपूर्ण मुद्दों तथा भारत के अनेक अन्य विकास परक मुद्दों पर आधारित हैं। आपकी अधिकांश फिल्मों में आपके स्वयं के जीवन की अनूठी अंतदृष्टि और वह विद्यमान है जो आपने भारत के दूरस्थ भाग के एक छोटे से अन्जाने गांव से लेकर विश्व के महानगरों तक का सफर तय करके हासिल किया है। आपकी फिल्में मनोरंजन तो करतीं ही हैं, साथ ही साथ प्रचुरता से समाज के प्रासंगिक मुद्दों का चित्रण भी करती हैं, और यह शिक्षा देती हैं कि फिल्में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन का एक सशस्त माध्यम हो सकती है।

4. आपकी पहली सुप्रसिद्ध और बहुचर्चित फिल्म 'आई एम कलाम' (2011–12) को 32 अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए जिनमें आईएफएफएलए में व्यूअर्स चॉइस पुरस्कार, मांट्रियल में 'पीपल्स चॉइस पुरस्कार', कैलिफोर्निया में बेस्ट फीचर फिल्म तथा बेस्ट डायरेक्टर पुरस्कार, जर्मनी एवं ब्रोंज कायरों में आईसीसीएफ का 'द डॉन क्विग्जोट प्राइज', अंतर्राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र का पुरस्कार, आईएफएफआई, गोवा में युवा ज्यूरी द्वारा भारतीय पैनोरमा में सर्वोतम फिल्म पुरस्कार, बेस्ट डेब्यूट डारेक्टर अरबिन्दम पुरस्कार मुख्य हैं। इस फिल्म ने दुनिया भर में लगभग 70 अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में शिरकत की। आपकी दूसरी फीचर फिल्म 'जलपरी' जो कन्या भ्रूण हत्या और लैंगिक समानता पर केन्द्रित है, भी दर्शकों द्वारा अत्यधिक चाही और सराही गई है। इस फिल्म ने कैन्स, 2013 में गौरवशाली एमआईपी जूनियर पुरस्कार भी जीता है। आपकी तीसरी फिल्म 'बबलू हैप्पी है' जो युवाओं तथा एचआईवी/एड्स पर आधारित है, को भी भारत में दर्शकों और आलोचकों द्वारा सराहा गया। आपकी चौथी फिल्म 'कौन कितने पानी में' जो भारत में जल संकट पर एक व्यंगय है, पिछले वर्ष रिलीज हुई थी।

5. आपने एशियाई सिनेमा में श्रेष्ठ पारिवारिक एवं बाल फिल्म पटकथा की रचना हेतु भारत में ''अंतर्राष्ट्रीय स्क्रीन राइटर्स लैब'' की स्थापना की। आपने भारत–पाकिस्तान–बिट्रेन के मध्य सांस्कृतिक संपर्क हेतु यू.के. आर्ट कांउसिल के लिए 'इंडियन क्रिएटिव एसोसिट्स' के तौर पर कार्य किया और 60X60 कार्यक्रमों के वित्तपोषित किया।

6. आपको वर्ष 2005 में यू.एन., यू.के, फिल्म फेलोशिप द्वारा क्रिएटिव फ्यूचर कार्यक्रम 'यूनाइटेड नेशन्स मीडिया फेलो 2003' के माध्यम से ब्रिटिश काउंसिल ने 'लॉगेस्ट जर्नी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया, इसके अतिरिक्त फिल्मों के माध्यम से सामाजिक मुद्दों पर आपके योगदान के लिए 'कर्मवीर पुरस्कार–2011', 'लीविंग लेजेंड ऑफ ओडिशा पुरस्कार–2012', ओडिशा आइकन 2011, दक्षिण एशियन इंटरप्रेन्योरशिप पुरस्कार 2013 आदि, इनमें से कुछेक नाम हैं।

Shri Nila Madhab Panda

Shri Nila Madhab Panda is an internationally acclaimed, iconic film-maker and story-teller par excellence.

2. Born on July 2, 1973 in a humble background in Subarnapur district of Western Odisha, Shri Panda's childhood and teenage years was an endless saga of daily struggle for basic necessities of life. However being the true visionary, he created his own means to shape his destiny from an early age, and is today one of the most respected film-makers, by sheer dint of his hard work, perseverance, passion for quality and excellence.

3. Shri Panda has produced and directed over 70 diverse and cutting edge films, documentaries and shorts. These films are based on important societal issues such as climate change, child labour, education, water issues, sanitation and many other developmental issues in India. Most of his films have unique insights drawn from his own life, the metaphorical distance that he has traversed from a small obscure village based in one of the remotest parts of India, to metropolitan cities across the globe. His films are entertaining, yet portray profusely socially relevant themes; driving home the point that films can be a powerful medium of positive social change.

4. Shri Panda's first iconic feature film, the highly-acclaimed 'I am Kalam'(2011-12), has won 32 International awards & National awards such as the Viewers' Choice award at IFFLA, People's Choice Award at the Montreal, Best Feature Film and best director award in California, "The Don Quixote Prize" of the ICCF at Germany and Bronze Cairo, The Prize of the International Center of Films For Children & Young People, Best film from the Indian Panorama by the Young Jury at the IFFI, Goa, Best Debut Director Aravindam Purashkaram. The film travelled across 70 International film festivals across the globe. His second feature film "Jalpari", about female feticide and gender equality, was also well received by audience and was highly acclaimed. It received the prestigious, MIP Junior award at Cannes 2013. His third feature film "Babloo Happy Hai", based on Youths and HIV/AIDS was also well appreciated by audience and critics in India. His fourth film "Kaun Kitney Paani Main", a satire on water crisis in India got released last year.

5. Shri Panda has founded the "International Screenwriters Lab" in India to create quality family and children's film scripts in Asian Cinema. He also served as the "Indian Creative Associate" for the UK Arts Council-funded 60x60 programme, to bring cultural connection between India-Pakistan and Britain.

6. Shri Panda has been honored with the "Longest Journey Award" from IIM-B, from the British Council through the creative future program, "United Nations Media Fellow 2003" by UN, UK Film Fellowship in 2005, the "Karmaveer Puraskar-2011" for his contribution on social issues through film medium, Living Legend of Odisha Award 2012, Odisha Icon 2011, South Asian Entrepreneurship award 2013, to name just a few.